Knowledgeable Research –Vol.1, No.10, *May 2023*

Web: http://www.knowledgeableresearch.com/

'धनुरातनोमि' काव्यसंग्रह में निरूपित आदिवासी-विमर्श

अरुण कुमार निषाद
असिस्टेण्ट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)
मदर टेरेसा महिला महाविद्यालय,
द्वारिकागंज, कटकाखानपुर, सुल्तानपुर
Email: arun.ugc@gmail.com

****

शोध-सारांश

आदिवासी शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है, आदि और वासी । आदि का अर्थ 'मूल' और 'वासी' का अर्थ निवासी है । आदिवासी से तात्पर्य धरती के मूल निवासी से है जो घने जंगलों, ऊँचे पर्वतों और दुर्गम घाटियों में निवास करते हैं । आदिवासी उन्हें कहते हैं जो सभ्य जगत से दूर पर्वतों और जंगलों में दुर्गम स्थानों पर निवास करते हैं, समान जनजातीय बोली का प्रयोग करते हैं तथा अधिकांशतया मांसभक्षी तथा अर्द्धनग्न अवस्था में रहते हैं । आदिवासी का शाब्दिक अर्थ है आदिकाल से देश में रहने वाली जाति ।

भारत सांस्कृतिक विविधताओं का देश है । यहाँ पर विभिन्न जातियाँ निवास करती हैं । जिनमें आदिवासियों का महत्वपूर्ण स्थान है । आदिवासी हमारी प्राचीन संस्कृति के परिचायक हैं, जो समाज से अलग रहने के कारण पिछड़ गये हैं । आज आदिवासी समाज संकट के कठिन दौर से गुजर रहा है । जल, जंगल और जमीन की समस्या, लोक संस्कृति की समस्या, शिक्षा, स्वास्थ्य और स्त्रियों से जुड़ी समस्याएँ दिनों-दिन गंभीर होती जा रही हैं । भारत में आदिवासियों को अनेक नामों से पुकारा जाता है ऐबोरिजिनल, इंडिजिनस, देशज, मूल निवासी, जनजाति, वनवासी, जंगली, गिरिजन, बर्बर आदि ।

प्रो.बीर भारत तलवार ने आदिवासी सम्बन्धी साहित्य की चार श्रेणियाँ बनाई हैं- 1.कुछ ऐसे लेखक हैं, जो आदिवासी समाज के बारे में बहुत कम और सतही जानकारी नहीं है और साथ ही अपने सवर्ण हिन्दू संस्कारों से ग्रस्त है, अपने सामाजिक-सांस्कृतिक पूर्वाग्राहों से ग्रस्त हैं और उसी दृष्टि से आदिवासी समाज को चित्रित करते हैं । 2.दूसरी श्रेणी उन लेखकों की है जो लम्बे समय से आदिवासियों के करीब कहते आए हैं और उनसे पूरी सहानुभूति रखते हैं,उनके समाज से थोड़ा-बहुत वाकिफ भी हैं इनकी मुख्य प्रवृत्ति आदिवासियों के दमन शोषण औ उत्पीड़न को चित्रित करने और उनकी आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं को उठाने की है । 3.उन लेखकों का साहित्य जो आदिवासियों के बीच लम्बे समय तक रहे हैं, जिन्होंने उनका अच्छा-बुरा देखा है और उनकी प्रवृत्तियों को समझने का प्रयास किया है । 4.चौथी श्रेणी खुद आदिवासियों द्वारा लिखे गये साहित्य की

है । वह उन्होंने अपनी मूल भाषाओं में लिखा हो या हिन्दी, बाँग्ला या अन्य प्रादेशिक भाषाओं में, इससे फर्क नहीं पड़ता । इन चार श्रेणियों में से वीर भारत तलवार चौथी श्रेणी को ही प्रामाणिक आदिवासी साहित्य मानते हैं और शेष तीन श्रेणियों को आदिवासी सम्बन्धी साहित्य । हिन्दी आदिवासी कविता में पहला नाम सुशीला सामद का है, लेकिन उसके बाद एक निरन्तरता का अभाव दिखाई देता है। इसलिए समकालीन हिन्दी आदिवासी कविता की शुरुआत हम रामदयाल मुण्डा की कविताओं से मान सकते हैं । जिन्होंने मुंडारी के साथ हिन्दी में भी कविताएँ लिखी हैं ।

आदिवासी साहित्य की परम्परा को तीन भागों में बाँटकर समझा जा सकता है-

1.पुरखा साहित्य

2.आदिवासी भाषाओं में लिखित साहित्य की परम्परा

3.समकालीन आदिवासी लेखन ।

डॉ.रमणिका गुप्ता के अनुसार-"बिना जंगल, जमीन, अपनी भाषा, जीवन शैली, मूल्यों के बिना आदिवासी, आदिवासी नहीं रह सकता। आदिवासी इस देश का मूल निवासी है । "

क्रोबर के अनुसार-"आदिम जनजाति से लोगों का एक संबंध है, जिंदगी अपनी एक सामान्य संस्कृति होती है । "

बीज शब्द : *संस्कृत साहित्य, नवलेखन और आदिवासी-विमर्श ।*

****

मूल-आलेख

'धनुरातनोमि' काव्यसंग्रह डॉ.ऋषिराज जानी द्वारा एक अनूदित काव्यसंग्रह है | इस संकलन में 17 भाषाओं (1.मुण्डारी 2.कुडुख 3.संताली 4.खडिया 5.हो 6.नगपुरिया 7.मराठी 8.हिन्दी 9.मणिपुरी 10.ढूंढाडी 11.आङ्ग्ल 12.गुजराती 13.चौधारी 14.देहवाली 15.कुंकणा 16.धोडीआ 17.गामीत) के 33 कवियों की कविताओं का संस्कृत अनुवाद है । परिशिष्ट भाग में हर्षदेव माधव, कौशल तिवारी, ऋषिराज जानी की संस्कृत की मौलिक आदिवासी कविताएँ हैं ।

डॉ.ऋषिराज जानी का जन्म संस्कृत के प्रयोगधर्मी कवि डॉ.हषदेव माधव के पुत्ररत्न के रुप में 3 अप्रैल 1988 ई. को अहमदाबाद (गुजरात) में हुआ । आपको साहित्य अकादमी का बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त हो चुका है | आप पेशे से वैज्ञानिक (मेडिकल साइंस के) हैं |

रचनाएँ- आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं- 1.डाकडनो डर (गुजराती लघुकथा) 2. प्रत्यक्ष ब्रह्म: विघ्नेश गणेश 3.धर्मशास्त्रनो परिचयात्मक इतिहास 4.संस्कृत कथाओ(गुजराती) 5.मेनेजमेन्टना स्वामी शिव 6.रुद्र अष्टाध्यायी 7.ऋषि-मुनिओनी वार्ताओ 8.रक्तशाटीधारिणी माता 9.'चमत्कारित: चलदूरभाष:' (साहित्य अकाकदमी दिल्ली द्वारा 2016 ई. का बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त रचना) 10. कपि: कूर्दते शाखायाम् 11. निशिगन्धा 12.समुद्रे बुद्धस्य नेत्रे 13.सूर्यगेहे तमिस्त्रा (भारतीय दलित कविता) 14.अन्तरिक्षयोधा: (साइंस फिक्शन उपन्यास) ।

मुण्डारी भाषा के कवि **अनुज लगुन** 'उलगुलानक्रान्ते नार्य:' कविता में लिखते हैं कि वे आदिवासी नारियाँ जो कभी हाशिए पर थी अब मुख्यधारा में आने के लिए प्रयासरत हैं ।

दु:स्वप्नानां कृते

ताभिर्गुम्फितानि,

x x x x x

'उलगुलान' क्रान्ते नार्य: ।[1]

x x x x x

उलगुलान की औरतें[2]

ता: तादृश्यो युद्धोत्सुका आसन्	**उतनी ही लड़ाकू थीं**
यथा हि तासां सेनापति	**जितना कि उनका सेनापति**
ता: सौन्दर्यादपि अधिकतरा	**वह अपनी खूबसूरती से कहीं**
भयावहा आसन्	**ज्यादा खतरनाक थीं**

[1]डॉ.ऋषिराज जानी (अनुवादक और संपादक), प्रथम संस्करण 2020 ई., धनुरातनोति (भारतीय-आदिवासी-कविता) गोविन्द गुरु प्रकाशन गोधरा, अमदाबाद, पृष्ठ संख्या 26

[2]गुप्ता रमणिका, प्रथम संस्करण 2015 ई.,कलम को तीर होने दो(झारखण्ड के आदिवासी हिन्दी कवि), वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 56

स्वकबरीषु ता:	**अपने जूड़े में उन्होंने**
'सरहुल' -'ईचाबा'-पुष्पाणां स्थानेषु	**सरहुल और ईचा:बा की जगह**
पराक्रमपुष्पाणि निवेषयन्ति ।	**साहस के फूलों को खोंसा था**

कुड़ुख भाषा के कवि **महादेव टोप्पो** लिखते हैं कि हम आदिवासी तब तक अच्छे थे जब तक हम में समझ नहीं थी । हम आज बुरे हो गये हैं क्योंकि हम में भी वह चेतना आ गयी है कि हमारे लिए भला क्या है? बुरा क्या है?

यावत् पर्यन्तं ते आसन्	**जब तक थे वे**
वनेषु,	**जंगल में**
मांदरवाद्यानि वादयन्त:	**मांदर बजाते**
वंशीं वादयन्त:	**बाँसुरी बजाते**
पशूनामाखेटं कुर्वन्त:,	**करते जानवरों का शिकार**
अर्धनग्नदेहास्ते	**अधनंगे शरीर**
अतिभद्रा आसन्	**वे बहुर भले थे**

x x x x x

आम! अधुना तेषु आगत एको दुर्गुण: ।	**हाँ, उनमें आ गई है अब एक बुराई**
ते किञ्चित् किञ्चिद्	**वे कुछ-कुछ**
विचारयन्ति,	**सोचने लगे हैं**
किञ्चित् किञ्चिद् वदन्ति ।	**कुछ-कुछ बोलने लगे हैं**

किञ्चित् किञ्चिद् याचन्ते ।[3] **कुछ-कुछ माँगने लगे हैं**

विनोद कुमार शुक्ल की कविता 'विपणीदिवसोऽस्ति' हमारे कथाकथित सभ्य समाज के सामने एक प्रश्न खड़ा कर देती है कि जिस आदिवासी लड़की को शेर से डर नहीं लगता उसे आखिर 'गीदम' (छतीसगढ़ राज्य का एक नगर) के बाजार जाने से क्यों डर लगता है । क्या इसलिए कि मनुष्य की खाल में घूम रहे शेर जंगल के शेर से अधिक खतरनाक हैं?

एकाकिनी आदिवासिकन्या

निबिडं वनं गन्तुं न बिभेति,

व्याघ्रसिंहेभ्यो न बिभेति,

किन्तु

मधूकपुष्पाणि नीत्वा 'गीदमप्रदेशविपणीं' गन्तुं बिभेति ।[4]

आदिवासी और जंगली पशु-पक्षियों को एक-दूसरे से कोई डर नहीं होता ।वे एक-दूसरे के सहचर होते हैं।

एका आदिवासिकन्या	**एक आदिवासी कन्या**
मधूकपुष्पाणि चित्वा चित्वा	**महुआ बीनते-बीनते...**
व्याघ्रं पश्यति	**एक बाघ देखती है**
यथा हि वने एको व्याघ्रो दृश्यते	**जैसे जंगल में एक बाघ दिखता है ।**
व्याघ्र आदिवासिकन्यां	**आदिवासी लड़की को बाघ**
तथैव पश्यति	**उसी तरह देखता है**

[3]वही, पृष्ठ संख्या 28

[4]वही, पृष्ठ संख्या 84

यथा वने	**जैसे जंगल में**
आदिवासिकन्या सहजता दृश्यते,	**एक आदिवासी लड़की दिख जाती है**
यथा वनस्य विहगा दृश्यन्ते,	**जंगल के पक्षी दिख जाते हैं**
यथा चित्रपतङ्गो दृश्यन्ते ।	**तितली दिख जाती है**
तत्पश्चात् व्याघ्र: पूर्ववत्	**और बाघ पहले की तरह**
शुष्कपर्णेषु जृम्भित्वा विश्राम्यति ।	**सूखी पत्तियों पर जंभाई लेकर पसर जाता है ।**

जीतेन्द्र वसावा लिखते हैं कि तुम हमको सभ्य बनाने के चक्कर में हमारी संपत्तियों पर आधिपत्य जमाकर हमें गुलाम बनाना चाहते हो । तुम स्वार्थवश हमें अपने तरफ मिलाना चाहते हो तुम्हारे मन में कहीं-न-कहीं कपट छिपा हुआ है ।

'चौर-लुण्ठाक-शूकर-जाल्म'

इत्यादिभि: शब्दैरतर्जयत् ।[5]

महेन्द्र पटेल (कुंकणा भाषा के कवि) को चिन्ता है कि धीरे-धीरे एक आदिवासी संस्कृतियाँ नष्ट हो जाएँगी ।

बहुवर्षेभ्य: पश्चात्

'कूहचु:' वनमगच्छत् ।

स व्यलोकयद् यन्

न गुल्मसमुदाय आसीत्,

न वृक्षा:, न क्षुपा: ।[6]

[5]वही, पृष्ठ संख्या 127

[6]वही,पृष्ठ संख्या 133

गामीत भाषा की कवयित्री **किरण गामीत** लिखती है कि आदिवासियों को मोक्ष की इच्छा नहीं होती है ।वे हमारी तरह जाति धर्म आदि के नाम पर भी नहीं लड़ते हैं ।

मोक्षस्य मोहो नास्ति,

धर्मं ते न जानन्ति ।

सृष्ट्या: संवर्धनं हि तेषां धर्म:,

प्रकृतौ जीवनमेव तेषां मोक्ष: ।[7]

ड़ॉ.हर्षदेव माधव कहते हैं कि शहरीकरण सबको निकलता जा रहा है अब तो वनों में भी स्वतन्त्रता और स्वच्छन्दता नहीं है । पेड़-पौधे, नदियाँ धरती, आकाश सब औद्योगीकरण के कारण नष्ट होते जा रहे हैं ।

कोऽयं रोग: खलु

x x x

गता नगरमायाबद्धा:?[8]

'अस्माकं विकास:' कविता में वे प्रश्न करते हुए कहते हैं कि - क्या हमारा विकास यही है आप हमारी सम्पत्तियों को हड़प लो ।

हे सज्जना: !

हे महाजना: !

हे नेतार: !

x x x

नूनं कृतो युष्माभिर्नो विकास: ।[9]

ड़ॉ.कौशल तिवारी कहते हैं कि पेड़-पौधे, वनस्पतियाँ, ऋतुएँ, नदी, पर्वत, इत्यादि सब एक दिन केवल कवि और कविता का विषय मात्र रह जाएँगे ।

[7]वही,पृष्ठ संख्या 140

[8]वही, पृष्ठ संख्या 142

[9]वही, पृष्ठ संख्या 143-44

दूरदर्शनस्य वृत्तचित्रेषु,

पाठ्यपुस्तकानां कृष्णकर्गदेषु,

कवीनां लेखनीषु च ।[10]

ड़ॉ. ऋषिराज जानी की कविता 'वनस्य मधूका सर्वं जानन्ति' यह सोचने पर मजबूर कर देती है कि क्या हम मनुष्य हैं । आखिर हमारी संवेदनाएँ कहाँ मर गए हैं हम इतने गिर गयी हैं । हम इतना नीचे गिर गए हैं । इतना चारित्रिक पतन हो गया है कि जिन्हें दुनिया के छल-कपट के बारे में कुछ भी नहीं पता उनको भी हम छल रहे हैं । भोली-भाली आदिवासी कन्या अपनी हवस का शिकार बना रहे हैं ।

तदा चिकित्सकेन कथितं तद्

'त्वं 'एच. आई.वी.' ग्रस्ताऽसि ।' इति ।

x x x

किन्तु वनस्य मधूका: सर्वं जानन्ति ।[11]

पहले जो प्रकृति आदिवासियों को अपनी लगती थी । इन पर भी नगरीय मनुष्यों ने अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया है ।

वनमासीन् मे माता

वनवृक्षा आसन् मे भ्राता ।

x x x

अहं तु मेलायां प्रभ्रष्ट: शिशुक: ।[12]

[10]वही, पृष्ठ संख्या 146

[11]वही, पृष्ठ संख्या 149

[12]वही, पृष्ठ संख्या 151

संथाली कवयित्री **निर्मला पुतुल** लिखती हैं कि देश-दुनिया से कटे होने के कारण आदिवासियों को बहुत सारी चीजों की जानकारी नहीं हो पाती। उनकी अपनी एक छोटी सी दुनिया होती है जिसमें वह जन्म लेते हैं और मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

तासां दृष्टिविस्तारपर्यन्तं हि

सीमितनस्ति तासां विश्वम् ।[13]

x x x

तासां दृष्टिविस्तारपर्यन्तं हि

सीमितमस्ति तासां विश्वम् ।

तासां विश्वसदृशानि

नैकानि विस्वानि समाविष्टानि

सन्त्यस्मिन् विश्वस्मिन्

इति ता न जानन्ति ।

ता न जानन्ति यत्

केन प्रकारेण आयाति

तासां निर्मितं वस्तुजातं

दिल्हीनगरीं

यद्यपि राजमार्गागमनात् पूर्वमेव हि

अन्तिम स्वसन्ति

तासां विश्वस्य पादतिमार्गा: ।

न जानन्ति ता यत्

[13]वही, पृष्ठ संख्या 49

कथं शुष्यति नद्य:

तासां विश्वस्य समीपे

आगमनात् पूर्वम् इति ।

केन प्रकारेण प्रविशन्ति तासां

छवय: महानहरम् ।

ता न जानन्ति,

न जानन्त्येव ।

x × × x x

हिन्दी अनुवाद- उनकी आँखों की पहुँच तक ही

सीमित होती उनकी दुनिया

उनकी दुनिया जैसी कई-कई दुनियाएँ

शामिल हैं इस दुनिया में

नहीं जानतीं वे

वे नहीं जानतीं कि

कैसे पहुँच जाती हैं उनकी चीज़ें दिल्ली

जबकि राजमार्ग तक पहुँचने से पहले ही

दम तोड़ देतीं उनकी दुनिया की पगडंडियाँ

नहीं जानतीं कि कैसे सूख जाती हैं

उनकी दुनिया तक आते-आते नदियाँ

तस्वीरें कैसे पहुँच जातीं हैं उनकी महानगर

नहीं जानतीं वे! नहीं जानतीं!! ।

हरिराम मीणा 'आदिवासी लड़की' कविता में लिखते हैं कि स्त्री सौन्दर्य के अतिरिक्त भी और विषय हैं जिन पर कविताएं लिखी जा सकती हैं ।

वर्तुलाकारे कपोले

उन्नतौ पयोधरौ

गभीरा नाभि:

x x x

पुनरपि लिख

तस्या: आदिवासिकन्या: आदिवासिकन्याविषयकां

कविताम् ।[14]

अंग्रेजी की सुप्रसिद्ध कवयित्री **तेमसुला आओ** आदिवासियों को जंगली, आक्रान्ता और बर्बर जैसे नामों से पुकारने वालों का जवाब देते हुए कहती हैं कि आदिवासी भी हमारी तरह ही मानव हैं हमारी तरह ही सोचते समझते हैं। अपनी दृष्ट बदलिए और उन्हें भी अपना मानिए ।[15]

इरोम चानू शर्मिला लिखती है कि हमारा यह परिश्रम व्यर्थ नहीं जाएगा । आज नहीं तो कल हमारी आने वाली पीढ़ी को एक-न-एक दिन बराबरी का दर्जा अवश्य प्राप्त होगा।

शान्ते: सुगन्धं भूत्वा

प्रसरेयं

स्वजन्म भूमे : 'कांगलेई' प्रदेशात् ।[16]

तेमसुआ आओ लिखती है कि पहाड़ो पर रहने वाले बच्चों में जो योग्यताएँ है वह शहरी बच्चों में नहीं हैं । वे बच्चे पानी के आग के खोजकर्ता हैं । वे जंगली पशु-पक्षियों की भाषा समझते हैं । वे नक्काशी कला के जानकार हैं और उन्होंने इस कला को चींटियों से सीखा है । येबच्चे कलाकार, शिल्पकार और दार्शनिक भी हैं ।

पर्वतस्य पुत्रा: -	**पहाड़ के बच्चे**
काव्यात्मकाश्च राजनैतिकश्च	**काव्यात्मक और राजनीतिक**

[14]वही, पृष्ठ संख्या 75-78

[15]वही,पृष्ठ संख्या 89

[16]वही, पृष्ठ संख्या 89

बर्बराश्च लयात्मकश्च	**बर्बर और लयात्मक**
जलान्वेषणकर्तार:	**पानी के खोजकर्ता**
अपि च वह्नेर्योधा:	**और आग के योद्धा ।**
पर्वततनूजा: -	**पहाड़ के बच्चे**
रचनाकारा: शिल्पकारा:	**रचने गढ़ने वाले शिल्पकार**
उत्पादंकर्तार:, कर्षका:	**उपजने वाले किसान**
आखेटका: च कलाकाराश्च,	**शिकारी और कलाकार**
गायकाश्च दार्श्निकाश्च	**गायक और दार्शनिक**
उदात्तप्रेमिण अपि च अग्रेसरा जाङ्गला:,	**उदात्त प्रेमी और अगुआ जंगली**
गृहनिर्मातर: अपि च नगरविध्वंसकाश्च ।[17]	**गृह निर्माता और नगरों के विध्वंसक ।**

ग्रेस कुजूर की कविता वह्नि (अग्नि) में भी प्रतिशोध की भावना नजर आती है ।

अनुकम्पाया रूपेण सेवानिवृत्तिं लब्धा	**अनुकंपा के रुप में**
उराइन एतवरिया इति नाम्नी युवती	**'एतवरिया उराइन'**
नेच्छति	**नहीं चाहती**
कार्यालयेषु अधिकारिण: जलं पाययितुम्	**दफ्तरों में बाबूओं को पानी पिलाना**
चायचषकान् नेतुम्	**चाय लाना**
अपि च नेच्छति	**और न ही चाहती है**
अधिकारिणां पञ्चिका वोढुम् ।[18]	**अफसरों की फाइलें ढोना ।**

निष्कर्ष- इस प्रकार हम देखते हैं कि इधर भारतीय भाषाओं में जो आदिवासी रचनाशीलता विकसित हुई है , उसकी खासियत उसकी जीवन्तता है । वह कल्पना से अधिक सीधे जीवन से ही बिम्बों को उठाकर उसके माध्यम से मार्मिक सवालों व सन्दर्भों को सामने लाती है । इन कवियों की कविताएँ

[17]वही, पृष्ठ संख्या 93-94

[18]वही, पृष्ठ संख्या 33

समकालीन बहसों व विमर्शों से तो जुड़ी हैं ही, वह साधारण जीवन के सूक्ष्म प्रसंगों को भी अनदेखा नहीं करती । ये कविताएँ चेतना में देर तक झनझनाती रहने वाली कविताएँ हैं ।

सन्दर्भ-ग्रन्थ

1.सिद्दिकी यास्मीन अख्तर, 2016 ई., समकालीन कथा साहित्य औरऔर आदिवासी महिला की अस्मिता (शोध-प्रबन्ध), (कोटा विश्वविद्यालय, कोटा राजस्थान ।

2.जानी डॉ.ऋषिराज (अनुवादक और संपादक), प्रथम संस्करण 2020 ई., धनुरातनोति (भारतीय-आदिवासी-कविता) गोविन्द गुरु प्रकाशन गोधरा, अमदाबाद ।

3.टेटे वंदना (संपादक), प्रथम संस्करण 2017 ई., लोकप्रिय आदिवासी कविताएँ, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली ।

4.मीणा गंगा सहाय, प्रथम संस्करण 2017 ई., आदिवासी चिन्तन की भूमिका,, अनन्य प्रकाशन, नई दिल्ली ।